Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

# “पर्यावरण: समस्या एवं समाधान’’

**प्रो. मीना. जे. रावल***

पर्यावरण उन सभी भौतिक रासायणिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत इकाई है जो किसी जीवधारी अथवा पारितंत्रीय आबादी को प्रभावित करते हैं तथा उनके रूप, जीवन और जीविता को तय करते हैं। सामान्य अर्थ में यह हमारे जीवन को प्रभावित करनेवाले सभी जैविक और अजैबविक तत्वों, तथ्यां, प्रक्रियाओं और घटनाओं के समुच्चय निर्मित इकाई है। यह हमारे चारों ओर व्यापत है। और हमरे जीवन की प्रत्येक घटना इसी के अन्दर सम्पादित होती है तथा मनुष्य अपनी समस्त क्रियाओं से इस पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। प्रत्येक जीवधारी और उसके पर्यावरण के बीच अन्योन्याश्रित का संबंध होता है।

**पर्यावरण का अर्थ :-**

पर्यावरण या वातवरण शब्द का निर्माण दो शब्दों से मिलकर हुआ है। परि+आवरण। परि का अर्थ है चारों तरफ से और आवरण का अर्थ है - ढँके हुए।

**पर्यावरण की परिभाषा :-**

पर्यावरण को विद्वानों ने इस प्रकार परिभाषित किया है।

(१) "भू- पृष्ठ तथा उसकी समस्त प्राकृतिक दशाएं प्राकृतिक संसाधन भूमि, जल, पर्वत, मैदान, खनिज, पादप जन्तु अदि तथा प्राकृतिक शक्तियाँ जो पृथ्वी पर विद्वमान होकर मानव जिवन को प्रभावित करती है।"

→ आर. एम. मौकाइवर

(२) "एक व्यकति के पर्यावरण में वह सब कुछ सम्मिलित किया जाता है, जो उसके जन्म से मृत्यु पर्यतन तक प्रभावित करता है।"

(३)

→ बोरोन

(४) "पर्यावरण मे उन सभी तत्वों को शामिल किया जाता है जो जैव स्वरुप या वस्तु को निकट में घेरे होते हैं एवं उन्हें प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित करते हैं।"→ गिंस्वई

(५) "जीवों के परिस्थितिक कारकों का योग पर्यावरण है।"→ एच. किटिग

---

***प्रो. मीना. जे. रावल**

Saarth E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

(६) "पर्यावरण शब्द का अभिप्राय उन सभी बाहरी शक्तियों और तत्वों से है, जो व्यकित को आजीवन प्रभावित करते हैं।"

→ वुडवर्थ

पृथ्वी के जिस भाग में जीवधारी रहते हैं उसे जीवमणडल की माप लगभग स्थिर है। यह क्षैत्र धरती से लगभग १६ कि.मी. ऊँचाई तक फैला है और इसका क्षेत्रकल ४५ करोड वर्ग किमी है।

जीवमणडल में पृथ्वी, वायु, जल, पेड़-पौधे और सभी जीव-जन्तु रहते है। जीवमणडल धरती, वायु, ताप और जल से समृद्ध है। ये चारों ही जीव के अस्तिअत्व के लिए आवश्यक अंग है। जनसामान्य के शब्दों में - "हमारी सम्पूर्ण पृथ्वी और उस पर उपस्थित प्रत्येक वस्तु हमारा पर्यावरण है"

**पर्यावरण की संरचना :-**

पर्यावरण दो अवयवों से मिलकर बना होता है (१) जैविक (२) अजैविक

**(१) जैविक अवयव :-** जैविक संघटकों में सूक्ष्म जीवाणु से लेकर कीडेमकोडे,. सभी जीव-जंतु और पेङ-पौधों का समवेश होता है। साथ ही उनसे जूडी़ सारी जैव क्रियाएँ और प्रक्रियाएँ भी। प्रकृतिका प्रत्येक जीव किसी न किसी रूप में एक दूसरे को प्रभावित करते है। कोई भी पूर्णत: आत्मानिर्भर नही होता।

**(२) अजैविक अवयव:-** अजैविक संघटकों में जीवन रहित तत्व और उनसे जूडी प्रक्रियाए आती है। जैसे- चटाने, पर्वत, नदी, हवा और जलवायु के तत्व आदि।

**पर्यावरणीय सम्स्याएँ:-**

ज्यादातर पर्यावरणीय समस्याएँ पर्यावरणीय अवनयन और मानव द्वारा निर्मित संसाधनो के उपभोग में वृध्धि से जूडी है। पर्यावारणिय अवनयन के अंतर्गत पर्यावरण में होनेवाले वे सारे परिवर्तन आते हैं जो अवांछनीय हैं और किसी क्षेत्र विशेष में या पूरी पृथ्वी पर जीवन और संधारणीयता को खतरा उत्फ्न करते हैं। अंत: इसके अन्तर्गत प्रदूषण, जलवायु, परिवर्तन, जैव विविधता का क्षरण और अन्य प्राकृतिकी आपदाए इतयादि शामिल की जाती हैं। पर्यावारणिय अवनयन के साथ मिलकर जनसंखया मे चारघातां की दर से हो रही वृध्धि तथा मानव द्वारा उपभोग के बदलते प्रतिरूप लगभग सारी पर्यावारणिय

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

समस्याओं के मूल कारण हैं। प्राकृतिक संसाधनों का मनुष्य द्वारा अपने आर्थिक लाभ हेतु इतनी तेजी से दोहन की उनका प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा पुनर्भरण (Replenishment) न हो पाए वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे संसाधन क्षरण के लिये जनसंख्या के दबा, तेज वृध्धिद्रर और लोगों के उपभोग प्रतिरुप काभी प्रभाव जिम्मेदार माना जाता है अनवीकरणीय संसाधनों का तेजीसे दाँहन उनके भणडार को समाप्त मानव जीवन के लीये कठिन परिस्थितिया पैदा कर सकता है। कोयला, पेट्रोलियम या धात्विक खनिजों के भणडरों का निमार्ण एक दीर्घ अवधी की घटना है और जिस तेजी से मनुष्य इनका दोहन कर रहा है ये एक न एक दिन समाप्त हो जायेंगे।

पर्यावरण के अंतर्गत हवा, पानी, अग्नि, पृथ्वी, आकाश ये पॉच तत्व मुख्य है। इन्ही पाँच तत्वो के अंतर्गत प्रत्येक जीव का पर्यावरण होता है। पंचमहाभूतों से बना मानवशरीर और प्रत्येक जीव प्रकृति और पर्यावरण से संलग्न होता है। मानव सजयता जिस तेजी से भौतिक और तकनिकी विकास की और अग्रसर हो रहि है उतनी ही तेजीसे प्रकृति और पर्यावरण का नुकशान भी कर रही है। मानव ने खुद अपने पैरों पर कुल्हाडी मारी है।

बडे-बडे कारखानों से निकलते जहरीले गैस, पानी में बहता जहरीला कचरा। मानवने हवा- पानी और खुराक अयात खाद्य ,पदार्थ ईन सब को प्रदूषित कर दिया है। मानव के इस भयानक प्रदूषण ने अनेक छोटी-बडी प्रजातियों को पृथ्वी पर से नष्ट कर दिया है। प्राकृतिक और अप्राकृतिक आपदाओं का निर्माता मनुष्य खुद है। समुद्र को भरकर वहां मानव वस्ती बसाना, जंगलो को काटकर कारखाने और कृषि और डैम बनाना वायुको जहरीली गैस से प्रदुषित कर देना और पृथ्वी में से खनीज द्रव्यों को मनमानी तेजी से निकालर पृथ्वी को खोखली करना ईन सब का जिम्मेदार मानव ही है। मानव निर्मित ईन समस्याओं को स्वयं मानवही भुगतेगा।

मानव सभ्यताकी आनेवाली पीढी को बिरासत में भयंकर रोग ही मिलेगा पृथ्वी में से सारे खनीज-तेल को निकाल लेंगे, हवा, पानी को जहरीली गैस से प्रद्रुषित कर देंगे तो मानव सभ्यता जीयेगी कैसे? पृथ्वी के प्रत्येक जीव को जीने के लिए ओक्सिजन - चाहिए किंतु कार्बनडायोक्साइड की ही भरमार प्रतिदिन बठ़ती जा रहि है। पर्यावरण को संतुलित बनाये रखना प्रत्येक मानव का फर्ज है। पर्यावरण के प्रती प्रत्येक मानव को जागृत होना पडेगा।

**समाधान** :- प्रदूषित पर्यावरण को शुद्ध करने का कार्य मानव को ही करना पडेग। मानव को उसके पर्यावरण के प्रति जागृत करने के लिए व्याख्यान, शिक्षा, फिल्म, साहित्य, नाटक, लेख, सेमिनार आदि अनेकविध माध्यमों से जागृत करना होगा। मानव को पर्यावरण को प्रदुषित करनेवाली प्र्त्येक बात से किनारा करना होगा।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

वृक्षों को लगाना जंगलों का संवर्धन करना, उसे बचाना, वृक्ष होगें तो ही हवा- पानी शुद्ध बनेगें पृथ्वी भी बचेगी।

**(१) पृथ्वी :-** मानव के अपनी भौतिक समृद्धि को और पृथ्वी के खनीज द्रव्यो को नीकालने की होड को कम करना होगा पृथ्वी को प्रदूषित होने से बचाने के तमाम उपाय शीघ्रही करना होगा।

**(२) समुद्रः-** समुद्र को भी बचाना होगा नहीं तो सुनामी जैसी भयंकर आपयाओं का शिकार होना पडेगा। बडी बडी नदियो को शुद्ध करना हो जैसे गंगा, यमुना, कावेरी आदि।

**(३) वायु/हवा:-** सबसे बडा प्रदुषण हवा का है। उसे रोकने का सधन प्रयास जरुरी है। हावा में ज्यादा से ज्यादा ओक्सिजन की मात्रा को बढाना और कार्बन डायोक्साईड की मात्रा को कम करना होगा। वृक्षो को लगाना उसका जतन करना होगा। वृक्षों की, जंगलो की कटाई पर रोक लगाना होगा। जहरीले गैस और कचरा उत्पन्न करनेवाले कारखानों पर रोक लगाना होगा।

**(४) अग्निः**- सूर्य की कडी धूप से बचने के लिए ओजोन की परत को बचाना होगा. जहरीले गैस आदि को कम कर शुद्ध हवा और ओक्सिजन की मात्रा को बढाकर सूरज की गरमी से पृथ्वी क बचा सकेंगे।

**(५) आकाश**:- आकाश में वैज्ञानिक उपकरणो टाल ना होगा। वरना आनेवाली सदियो में आकाश में से पानी की जगह उपग्रहो के भंगार की बारीश हो सकती है। हालही में प्रदर्शित कीचर फिल्मे “द क्लाइँग जैट” का जिक्र करना जरूरी है। फिल्म में प्रदुषण के राक्षस को निर्मित किया गया है। कृत्रिम शक्तियों के आगे कुदरती शक्तियों की हार हो सकती है। कार्बन डायोक्साईड रूपी शक्तिशाली राक्षस को मात करना असंभव हो जायेगा। मानव और कुदरती शक्ति को ऐसी कृत्रिम विनाशक शक्तियो के आगे जूकना पडेगा इसलिए अभी से मानव जाति को पर्यावरण के प्रति जागृत होना ही पडेगा।

**भारतीय चिंतनः-**

वैश्विक स्तर पर आज सबसे बडी समस्या पर्यावरण प्रदुषण की है। आज पूरा विश्र्व इस समस्या को लेकर चिंतित है। किंतु भारतीय मनिषियों ने तो शुरु सेही इस समस्याका समाधान ढ़ेढ लिया था पर्यावरण स्वरुप भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के अनेकविध घटको

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

को पूजा जाता है। जैसे वृक्षों का पूज्य मानकर पीपल, बरगद आदि के वृक्षों का पवित्र मानकर उसकी पूजा की जाती है। जल, वायु, अग्नि को भी देव मानकर उनकी पूजा की जाती है। समुद्र, नदी को माँ मानकर उसकी पूजा की जाती है। गंगा, सिंधु, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, नर्मदा जैसी नदियों को पवित्र मानकर पूजते है। धरती को भी माता का दरज्जा दिया गया है। प्राचीनकाल से ही भारतीय संस्कृति में मानव जीवन के साथ उनके प्रत्येक रीति-रिवाजो में प्रकृतिका विशेष पूजन-अर्चन होता है।

**सन्दर्भ ग्रंथ**

(१) पर्यावरण अध्ययन - मीना रावल
(२) पर्यावरण अध्ययन - ऐरय-भरुया
(३) वर्तमानपत्र:- गुजराती समाचार, दिव्य भास्कर, संदेश ।
(४) पर्यावरणीय मनोविज्ञान:- प्रेमसागरनाथ तिकरी
चलचित्र:- "द कलाईग जट"